**4. पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

ज्यों निकलकर बादलों की गोद से,
थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढ़ी।
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी,
आह, क्यों घर छोड़ कर मैं यों कढ़ी।

दैव मेरे भाग्य में है क्या बदा,
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में।
गिर पड़ूँगी चू अँगारे पर किसी,
या गिरूँगी मैं कमल के फूल में।

बह गई उस काल कुछ ऐसी हवा,
वह समंदर ओर आई अनमनी।
एक सुंदर सीप का मुँह था खुला,
वह उसी में जा गिरी मोती बनी।

(i) बूँद को किस बात का दुख था?

..........................................................................................................................................

(ii) नीचे गिरते समय बूँद क्या-क्या सोच रही थी?

..........................................................................................................................................

(iii) हवा बहने के कारण बूँद किधर आ गई?

..........................................................................................................................................

(iv) अंत में बूँद के साथ क्या हुआ?

..........................................................................................................................................

## 1.8 उत्तरमाला

**बोध-प्रश्न**

1. (क) नर को 2. (ग) मान को 3. (ख) सपना

**पाठगत प्रश्न-1.1**

1. (क) शरीर के होने को सार्थक करो
2. (ग) कर्म करने वाले का

**पाठगत प्रश्न-1.2**

1. (ख) वन की
2. (ग) स्वाभिमानपूर्वक श्रेष्ठ कार्य

❀ ❀ ❀

# 2

# स्वरोज़गार

आपने स्वरोज़गार शब्द सुना होगा। इसका अर्थ होता है – अपना रोज़गार। आपने देखा होगा कि गाँव के युवक रोज़गार की तलाश में अक्सर शहर जाते हैं। वहाँ उन्हें रोज़गार तो मिल जाता है; लेकिन अनुकूल काम न मिलने पर उनका सुख, आराम और आज़ादी छिन जाती है। गाँव में भी रोज़गार की संभावना होती है। लोग कई बार इसकी उपेक्षा कर देते हैं। स्वरोज़गार की दृष्टि से हमारे गाँवों का बहुत महत्त्व है। इस पाठ में इसी के बारे में बताया गया है।

## उद्देश्य

**इस कहानी को पढ़ने के बाद आप–**

- स्वरोज़गार का महत्त्व रेखांकित कर सकेंगे;
- शहर में काम करने की समस्याओं के बारे में बता सकेंगे;
- गाँव में रहने के लाभों की चर्चा कर सकेंगे;
- गाँव में रोज़गार के अवसरों से अवगत करा सकेंगे;
- वाक्यों के प्रकार बता सकेंगे तथा विभिन्न प्रकार के वाक्य बनाकर लिख सकेंगे।

## करके सीखिए

आपके गाँव में कई लोग स्वरोज़गार कर रहे होंगे, इनमें से किन्हीं पाँच रोज़गारों के नाम लिखिए :

..........................................................................................................................

..........................................................................................................................

## 2.1 मूल पाठ

**आइए, अब इस कहानी को ध्यान से पढ़ते हैं -**

### स्वरोज़गार

मोहन ने जैसे ही कमरे में अपना बैग रखा, उसकी छोटी बहन दीपा चिल्लाई– "माँ, माँ! भैया आ गया!"

माँ कौशल्या गाय को चारा दे रही थी। दीपा के तीव्र स्वर ने उसे चौंका दिया। अपने खोये हुए पुत्र मोहन को सामने देखकर वह अवाक् रह गई। उसके मुख से बस दो-चार शब्द ही निकले– "तू... कहाँ... था .. रे?" फिर उसका गला भर आया। उसकी आँखें छलछला उठीं। कौशल्या ने मोहन को गले से लगा लिया। पूरे नौ वर्ष बाद माँ को सामने देखकर मोहन की वाणी भी मूक हो गई। वह माँ के सीने से लगकर रोने लगा।

माँ पूछती रही और मोहन उत्तर देता रहा। मोहन को अपने बचपन के मित्र प्रताप की याद आ रही थी। उसने माँ से पूछा– "माँ! प्रताप कैसा है?"

"ठीक है। तुझे बहुत याद करता है। अचानक तेरे गुम हो जाने से वह भी बहुत दुखी हुआ था", माँ ने उत्तर दिया।

"अब कौन-सी कक्षा में पढ़ता है?"

"उसने बारहवीं कक्षा पास कर ली थी। उसे तो नौकरी भी मिल गई थी, लेकिन वह नौकरी पर नहीं गया।"

प्रताप के बारे में माँ की बातें सुनकर मोहन अतीत में खो गया। वह सोचने लगा कि यदि नौ वर्ष पहले वह घर से न भागा होता, तो अब तक बी.ए. पास कर चुका होता।

मोहन और प्रताप बचपन से ही गहरे मित्र थे। सारे अमृतपुर गाँव में इनकी मित्रता की चर्चा थी। दोनों मित्र सामान्य परिवार के थे। खेती-बाड़ी और पशुपालन से गुज़र-बसर होती थी। बस, अंतर यह था कि मोहन के सिर से बचपन में ही पिता का साया उठ गया था। माँ ने अथक परिश्रम करके मोहन और उसकी बहन दीपा का पालन-पोषण किया था। मोहन का मन खेती-बाड़ी में नहीं लगता था। उसने शहर की झूठी-सच्ची कहानियाँ सुनी थीं। उसके मन में सपने पलने लगे थे। उसके यही सपने उसे अमृतपुर से दिल्ली लेकर उड़ गए। उसे पता था कि माँ कभी भी उसे दिल्ली जाने की अनुमति नहीं देगी। इसीलिए, वह बिना कुछ कहे एक दिन स्कूल से ही दिल्ली भाग गया।

"अरे! क्या सोच रहा है?" माँ ने पूछा

"कुछ नहीं माँ! ... कुछ नहीं ...!"

"मैं जानती हूँ, तू प्रताप के बारे में ही सोच रहा होगा। जा, उससे मिल ले। वह अपने बगीचे में होगा।"

"हाँ माँ, मैं प्रताप से मिलकर आता हूँ।"

मोहन प्रताप के बगीचे पर पहुँचा। उसने देखा कि प्रताप पेड़ों के थाले बना रहा था। चारों ओर आड़ू, नाशपाती, खुबानी और पुलम के पेड़ लगे थे।

मोहन चुपचाप देखता रहा।

प्रताप ने अपनी नज़रें उठाईं। वह मोहन को देखकर आश्चर्यचकित हो गया। दोनों एक-दूसरे से लिपट गए। फिर दोनों एक पेड़ के नीचे बैठ गए। बातों की झड़ी लग गई।

प्रताप ने पूछा– "पहले तो यह बता कि इतना कमज़ोर क्यों हो रहा है?"

"कमज़ोर तो नहीं! ठीक-ठाक हूँ!" मोहन ने अपने मन की पीड़ा छिपाते हुए उत्तर दिया।

"आजकल कहाँ है तू?" प्रताप ने बात आगे बढ़ाई।

"दिल्ली।"

"दिल्ली? ... दिल्ली में क्या करता है?"

"नौकरी।"

"नौकरी! ... कैसी नौकरी!"

"एक सेठ के घर में घरेलू नौकर हूँ।"

"तनख्वाह क्या मिलती है?"

"एक हज़ार रुपए महीने।"

"खाने-पीने और रहने की क्या व्यवस्था है?"

"सेठ के घर में ही खाता-पीता हूँ। वहीं उसकी गैराज में सो जाता हूँ।"

"इसका मतलब तो यह हुआ कि तू पूरे दिन का नौकर है। रोटी पकाने से लेकर बर्तन माँजने तक का काम करना पड़ता होगा।"

"हाँ! ऐसा ही है।"

प्रताप की नज़रें मोहन के चेहरे पर ठहर गईं।

जाने क्यों, मोहन झेंप गया। वह प्रताप से बोला– "सुना है, पढ़ाई में तूने बहुत तरक्की की है। माँ बता रही थी कि तुझे नौकरी भी मिल गई थी।"

"हाँ! मैंने बारहवीं कक्षा प्रथम श्रेणी में पास की थी। तीन हज़ार रुपये महीने की एक नौकरी मुरादाबाद में मिल गई थी, लेकिन मैं गया नहीं।"

"क्यों?"

"मैंने इसके बारे में बहुत सोच-विचार किया।"

"फिर"

"मैंने निर्णय किया कि मैं नौकरी के लोभ में अपना गाँव और घर छोड़ कर नहीं जाऊँगा।"

"ऐसा क्यों?"

"मैंने सोचा, यदि मैं नौकरी पर शहर जाता हूँ, तो बूढ़े माता-पिता को साथ रखकर तीन हज़ार रुपयों में गुज़र-बसर करना कठिन होगा। दूसरे, ज़मीन-जायदाद, पशु, शुद्ध खान-पान, गाँव के प्राकृतिक स्वच्छ वातावरण और यहाँ के हितैषी लोगों से भी हाथ धोना पड़ेगा। मैंने यह भी सोचा कि तीन हज़ार रुपए तो मैं अपने गाँव में भी कमा सकता हूँ। वह भी स्वतंत्र रूप से, बिना किसी की गुलामी किए हुए।"

"फिर तूने क्या किया?" मोहन बोला।

"मैंने खेती और बागवानी को आजीविका का आधार बनाया। फलदार वृक्ष लगाए। ब्लॉक से ऋण लेकर दो उत्तम नस्ल की गाएँ खरीदीं। यहाँ मैं गाय का ताज़ा दूध पीता हूँ। अपनी धरती के अन्न, फल और सब्जियाँ खाता हूँ। गाँव के शुद्ध वातावरण में स्वस्थ रहता हूँ। माता-पिता की सेवा करता हूँ। इसके अतिरिक्त बचा हुआ अनाज, फल, सब्जियाँ तथा दूध बाज़ार में बेच कर तीस-चालीस हज़ार रुपये सालाना कमा भी लेता हूँ। ज़िंदगी की चकाचौंध में इन्सान इन सबसे दूर सिर्फ़ एक दिखावटी और मशीनी ज़िंदगी ही तो जी रहा है। यह सब विचारकर मैंने अपने गाँव में ही मेहनत और सम्मान की ज़िंदगी जीने का निर्णय लिया।"

प्रताप अपनी बात कहकर चुप हो गया।

कुछ देर बाद अचानक प्रताप ने पूछा– "अब कब लौटने का विचार है?"

मोहन बोला– "अब कभी नहीं प्रताप!... कभी नहीं। तुम्हारी बातें सुनकर मैं इस नतीज़े पर पहुँचा हूँ कि परदेस की अपमान भरी चुपड़ी रोटी से घर की सूखी रोटी अच्छी है। मैं भी अब गाँव में रहकर तुम्हारी तरह मेहनत और लगन से अपने टूटे सपनों को पूरा करूँगा। कठिनाई आने पर तुम से सलाह लूँगा। बचपन की तरह अब भी मेरा साथ दोगे न प्रताप?"

## शब्दार्थ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तीव्र स्वर | = | ऊँची आवाज़ | अथक | = | कभी न थकने वाला, बिना थके |
| अवाक् | = | भौंचक रहना | अनुमति | = | आज्ञा, इज़ाजत |
| वाणी | = | आवाज़, स्वर | थाले | = | पेड़ की जड़ में चारों ओर की मेड़ |
| मूक | = | चुप, खामोश | | | |
| अतीत | = | बीता हुआ समय | व्यवस्था | = | प्रबंध |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सपने पूरे होना | = | मन की इच्छा पूरी होना | जायदाद | = | संपत्ति |
| गुज़र-बसर करना | = | गुज़ारा करना | हितैषी | = | हित चाहने वाले |
| साया उठ जाना | = | मृत्यु होना | आजीविका | = | रोज़गार, रोज़ी-रोटी कमाने का साधन |
| गैराज | = | कार खड़ी करने का कमरा | | | |

## 2.2 बोध-प्रश्न

**सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

1. मोहन के झेंपने की वजह थी-

   (क) दिल्ली भाग जाना ☐ (ख) पढ़ाई पूरी न करना ☐

   (ग) घरेलू नौकर होना ☐ (घ) नौ साल बाद लौटना ☐

2. प्रताप शहर में नौकरी को मानता था-

   (क) स्वतंत्रता ☐ (ख) गुलामी ☐

   (ग) स्वरोजगार ☐ (घ) आजीविका ☐

## 2.3 आइए समझें

### 2.3.1 अंश-1

मोहन ने जैसे ही ......................... मिलकर आता हूँ।

कहानी की शुरुआत मोहन के नौ साल बाद शहर से अपने घर लौटने से होती है। मोहन के घर लौट आने से उसकी माँ बहुत खुश होती है और बहिन दीपा भी। मगर, इतने समय तक बिना बताए घर से दूर रहने के कारण मोहन को शर्मिंदगी का अहसास होता है। कहानी के इस अंश से मोहन और प्रताप के बारे में अनेक महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ मिलती हैं। मोहन अपने दोस्त प्रताप के बारे में माँ से पूछता है, तो माँ बताती है कि उसने बारहवीं कक्षा पास कर ली है। यह सुनकर मोहन अतीत की यादों में डूब जाता है। वह सोचता है अगर मैंने भी पढ़ाई की होती, तो बी.ए. पास कर लिया होता। पिता के मरने के बाद वह पढ़ाई छोड़कर माँ को बिना बताए स्कूल से ही दिल्ली चला गया था। वह जानता था कि यदि वह माँ से पूछता, तो माँ इसके लिए कभी राज़ी नहीं होती। यह अंश इस बात की भी अभिव्यक्ति करता है कि अनेक लोगों में, विशेषत: युवाओं में शहर को लेकर कितना भ्रम है! उन्हें लगता है कि शहर में अच्छा रोज़गार आसानी से मिल जाता है, श्रम नहीं करना पड़ता और जीवन हर हालत में सुख से भरा होता है। माँ के टोकने पर मोहन यादों से बाहर आता है और प्रताप से मिलने चल पड़ता है।

## पाठगत प्रश्न-2.1

**सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

1. माँ को सामने देखकर मोहन की वाणी मूक होने का कारण है –

   (क) डर ☐ (ख) शर्मिंदगी ☐

   (ग) नाराज़गी ☐ (घ) क्रोध ☐

2. शहर के जीवन के बारे में युवाओं को भ्रम है कि वह–

   (क) बहुत चुनौतीपूर्ण है ☐ (ख) बहुत संघर्षपूर्ण है ☐

   (ग) गुलामी से भरा है ☐ (घ) हर हाल में सुखमय है ☐

### 2.3.2 इकाई–2

**आइए, कहानी के इस हिस्से को एक बार फिर ध्यान से पढ़ते हैं :**

मोहन प्रताप के बगीचे ................................... मेरा साथ दोगे न प्रताप?"

मोहन अपने दोस्त प्रताप से मिलने के लिए जब उसके बगीचे में पहुँचता है, तो देखता है कि वह आड़ू, नाशपाती, खुबानी और पुलम के पेड़ों की जड़ के चारों ओर मिट्टी की मेड़ बना रहा है। मोहन को अपने बगीचे में देखकर प्रताप आश्चर्यचकित और खुश होता है। दोनों दोस्त वर्षों बाद मिलते हैं और सुख-दुख बाँटते हैं।

इस अंश में मोहन के शहर में बिताए गए कष्ट भरे दिनों का वर्णन है। प्रताप के पूछने पर मोहन बताता है कि वह दिल्ली में एक सेठ के यहाँ घरेलू नौकर है। उसे रहने के लिए एक गैराज में जगह दी गई है और एक हज़ार रुपये महीने मिलते हैं। मोहन बताता है कि वह पूरे दिन का नौकर है। यह बात शहर में मासूम लोगों के शोषण की ओर संकेत करती है। मोहन के पूछने पर प्रताप बताता है कि बारहवीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास करने के बाद उसे तीन हज़ार रुपए की नौकरी मुरादाबाद में मिल रही थी, लेकिन नौकरी के लोभ में वह अपना गाँव-घर छोड़कर नहीं जाना चाहता था। तीन हज़ार रुपयों में वह अपने बूढ़े माता-पिता को अपने साथ नहीं रख सकता था। साथ ही, उसे अपनी ज़मीन, पशु, शुद्ध हवा-पानी, खान-पान और स्वच्छ वातावरण तथा अपने हितैषियों से भी दूर जाना पड़ता, जबकि तीन हज़ार रुपए तो वह गाँव में रहकर भी कमा सकता है, वह भी आज़ादी के साथ। इसलिए, प्रताप गाँव में ही रहने का निर्णय लेता है। वह ब्लॉक से ऋण लेकर दो गाएँ खरीदता है। फलदार वृक्षों का बाग लगता है। सब्ज़ियाँ उगाता है। इससे वह अपने माता-पिता के साथ खुशी से रहता भी है और बचे हुए दूध, फल, सब्ज़ियाँ, अनाज आदि बाज़ार में बेचकर तीस-चालीस हज़ार सालाना कमाता भी है। ये सब बातें हम सबको शहरी और ग्रामीण जीवन की तुलना करने को बाध्य करती है। साथ ही, गाँव में ही उपलब्ध अनेक रोज़गारों को अपनाने के लिए प्रेरित करती हैं।

प्रताप का खुशहाल जीवन देख मोहन भी गाँव में ही रहकर स्वरोज़गार से अपना जीवन जीने का निर्णय लेता है। वह दिल्ली नहीं लौटना चाहता।

## पाठगत प्रश्न-2.2

**सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

1. दिल्ली में मोहन करता था -

   (क) दुकानदारी ☐ (ख) कारख़ाने में काम ☐

   (ग) सेठ के घर में नौकरी ☐ (घ) ऑफ़िस में नौकरी ☐

2. अंत में मोहन ने क्या निर्णय लिया?

   (क) वापस शहर जाने का ☐ (ख) शहर में नई नौकरी करने का ☐

   (ग) निराश होकर कुछ न करने का ☐ (घ) गाँव में रहकर स्वरोज़गार करने का ☐

## 2.4 भाषा-प्रयोग

इस पाठ की भाषा सरल और आम बोलचाल की है। संवाद पर्याप्त मात्रा में हैं। लेखक पात्रों के बारे में नहीं बताता, पात्र स्वयं अपने बारे में बताते हैं। संवादों के माध्यम से ही कहानी आगे बढ़ती है। पाठ में कई जगहों पर मुहावरों का प्रयोग भी किया गया है; जैसे- गला भर आना, साया उठ जाना, सपने पलना, झड़ी लग जाना आदि।

### वाक्य-संरचना

किसी बात या विचार को पूर्णता से प्रकट करने वाले शब्द-समूह को वाक्य कहते हैं।

इस पाठ में एक वाक्य आया है-

- माँ कौशल्या गाय को चारा दे रही थी।

अब एक दूसरा वाक्य पढ़िए-

- चारा गाय को माँ कौशल्या दे रही थी।

इन वाक्यों में से आपको कौन-सा वाक्य सही लगता है? आपको लगा होगा कि पहला वाक्य ही सही है। इसका कारण यह है कि यह वाक्य-संरचना के नियमों के अनुसार बना है।

हिन्दी भाषा के वाक्यों की संरचना में सबसे पहले 'कर्ता' आता है, फिर 'कर्म' और अंत में 'क्रिया' आती है। 'कर्ता' का अर्थ काम को करने वाला होता है। जिन शब्दों से काम के करने या होने का पता चलता है उन्हें 'क्रिया' कहते हैं। कर्ता के अलावा क्रिया का फल जिस पर पड़ता है, उसे कर्म कहते हैं।

इस प्रकार पहले वाक्य में फल जिस पर पड़ता है, उसे कर्म कहते हैं।

यानी देने का काम करने वाली का बोध कराने वाले शब्द - माँ कौशल्या - कर्ता

देने के काम का बोध कराने वाले शब्द - दे रही थी - क्रिया

क्रिया का फल कर्ता (माँ कौशल्या) के अलावा जिन-जन पर पड़ता है, वह है- 'चारा' और 'गाय को'। कैसे? ध्यान दीजिए–

क्या दे रही है - चारा - कर्म-1

किसको दे रही है - गाय को - कर्म-2

आसानी के लिए–

काम का बोध कराने वाले शब्द - क्रिया

क्रिया के बारे में कौन का उत्तर - कर्ता

क्रिया के बारे में क्या का उत्तर - कर्म-1

क्रिया के बारे में किसको का उत्तर - कर्म-2

## वाक्य के प्रकार

रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं- साधारण वाक्य, मिश्र वाक्य और संयुक्त वाक्य। आइए, इनके विषय में विस्तार से जानें–

1. **साधारण/सरल वाक्य –** ऐसे वाक्य, जिनमें एक उद्देश्य (अर्थात कर्ता) और एक विधेय (अर्थात् क्रिया) होता है, उन्हें सरल या साधारण वाक्य कहते हैं; जैसे-
   - मोहन देखता है।
   - सुधा खाना बनाती है।
   - दीपा चिल्ला उठी।

2. **मिश्र या मिश्रित वाक्य –** मिश्रित वाक्य में दो या दो से अधिक साधारण वाक्य होते हैं। ये वाक्य योजक शब्दों से जुड़े होते हैं। मिश्रित वाक्य में एक मुख्य वाक्य होता है, शेष वाक्य पहले वाक्य पर आश्रित होते हैं यानी, उनका अपना स्वतंत्र अर्थ नहीं होता; जैसे –
   - हम चाहते हैं कि आप विवाह में ज़रूर आएँ।

     मुख्य वाक्य - आप विवाह में जरूर आएँ (स्वतंत्र अर्थ)

     आश्रित वाक्य - हम चाहते हैं (स्वतंत्र अर्थ नहीं)

     योजक शब्द - कि

कुछ और उदाहरण देखिए–

- मोहन माँ के सीने से लगकर रोने लगा, क्योंकि वह नौ वर्ष बाद घर लौटा था।
- मोहन को प्रताप की याद आने लगी, जो उसके बचपन का साथी था।
- वह सोचने लगा कि यदि वह घर से न भागा होता तो अब तक बी.ए. पास कर चुका होता।

इस प्रकार मिश्रित वाक्य 'कि', 'क्योंकि', 'चूँकि', 'जो', 'जैसाकि', 'जिसे', 'यदि', 'जब', 'तो' आदि योजक शब्दों से जोड़कर बनाए जाते हैं।

3. **संयुक्त वाक्य –** संयुक्त वाक्य में एक से अधिक साधारण वाक्य होते हैं, जो एक-दूसरे पर आश्रित नहीं होते हैं यानी, सभी वाक्य अपने स्वतंत्र अर्थ रखते हैं; इन्हें 'और', 'तथा', 'नहीं तो', 'परंतु', 'सो', 'इसलिए', 'या', 'अथवा', 'एवं' आदि योजक शब्दों से जोड़ा जाता है; जैसे–

- ये लोग बड़े अभिमानी थे; परंतु धीरे-धीरे इनका अभिमान नष्ट हो गया।
- उसका गला भर आया और आँखें छलछला उठीं।

  ('उसकी' के लोप के साथ)

  पहला वाक्य - उसका भर आया; दूसरा वाक्य - उसकी आँखें छलछला उठीं।
- तुम्हें खुद की खेती-बाड़ी करना अच्छा लगता है या घरेलू नौकर बनना चाहते हो?

  (दूसरे वाक्य में 'तुम' के लोप के साथ)
- तुम मन लगाकर काम करो, अन्यथा नौकरी से निकाल दिया जाएगा।

  (दूसरे वाक्य में 'तुम्हें' का लोप के साथ)

**सरल वाक्य को संयुक्त एवं मिश्रित वाक्य में बदलना :**

| **सरल वाक्य** | **संयुक्त** |
|---|---|
| आलोक डाँट खाकर काम करता है। | आलोक डाँट खाता है, तब काम करता है। |
| संजीव ने स्कूल जाकर पढ़ाई की। | संजीव स्कूल गया और पढ़ाई की। |
| मुमताज़ को बहुत चाहने के कारण शाहजहाँ ने ताजमहल बनवाया। | शाहजहाँ मुमताज को बहुत चाहते थे, इसलिए ताजमहल बनवाया। |
| **सरल वाक्य** | **मिश्रित वाक्य** |
| ईमानदार व्यक्ति सफल होता है। | जो ईमानदार होता है, वही सफल होता है। |
| शाम को कमला मौसी आएगी। | जब शाम होगी, तो कमला मौसी आएगी। |
| एक लड़का बहुत अच्छा गाता था। | एक लड़का था, जो बहुत अच्छा गाता था। |

### अर्थ के आधार पर वाक्य के प्रकार

अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ प्रकार होते हैं। यहाँ हम विधानवाचक वाक्य, प्रश्नवाचक वाक्य, निषेधवाचक वाक्य और विस्मयादिबोधक वाक्य – इन चार प्रकारों के बारे में जानेंगे :

1. **विधानवाचक वाक्य** – किसी कार्य को करने की अथवा उसके होने की सूचना देने वाला वाक्य विधानवाचक वाक्य कहलाता है; जैसे –
   - बारिश हो रही है।
   - मैं जा रहा हूँ।
2. **प्रश्नवाचक वाक्य** – प्रश्न पूछे जाने का बोध कराने वाला वाक्य प्रश्नवाचक वाक्य कहलाता है; जैसे –
   - क्या बारिश हो रही है?
   - क्या मैं जाऊँ?
3. **निषेधवाचक वाक्य** – किसी काम के न होने या न किए जाने का बोध कराने वाले वाक्य निषेधवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे–
   - बारिश नहीं हो रही।
   - मैं नहीं जा रहा।
   - कृपया फूल न तोड़ें।
   - किसी को बुरा मत कहो।
4. **विस्मयादिबोधक वाक्य** – इस तरह के वाक्यों से हर्ष, शोक, घृणा, विस्मय आदि मन के तीव्र भावों का बोध होता है; जैसे -
   - वाह! बारिश हो रही है।
   - अरे! बारिश हो रही है।
   - अच्छा! बारिश हो रही है?
   - छिः! बारिश से कीचड़-ही-कीचड़ हो गई।

## 2.5 आपने क्या सीखा

- शहर की वास्तविकताओं को देखकर ही जाना जा सकता है।

- शहर में भी रोज़गार-संबंधी समस्याएँ हैं।
- गाँव में स्वरोज़गार की अनेक संभावनाएँ हैं।
- किसी बात या विचार को पूर्णता से प्रकट करने वाले शब्द-समूह को वाक्य कहते हैं।
- रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं– साधारण वाक्य, मिश्र वाक्य और संयुक्त वाक्य।
- अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं; जिनमें प्रमुख हैं– विधानवाचक, प्रश्नवाचक, निषेधवाचक और विस्मयादिबोध।

## 2.6 योग्यता-विस्तार

- **लेखक-परिचय** - यह कहानी डॉ. ओमप्रकाश शर्मा 'अश्वघोष' ने लिखी है। डॉ. अश्वघोष का जन्म 20 जुलाई, 1941 को उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले के रन्हेरा गाँव में हुआ था। वे लंबे समय तक शिक्षा-जगत से जुड़े रहे। विभिन्न विधाओं में उनकी 22 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। डॉ. अश्वघोष ने नव साक्षरों व अल्प भाषा-ज्ञान वाले पाठकों के लिए विशेष रूप से रचनाएँ लिखी हैं। उन्हें विभिन्न संस्थानों से कई पुरस्कार प्राप्त हुए; जिनमें उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय, उत्तर प्रदेश तथा संभावना संस्थान, मथुरा प्रमुख हैं।

## 2.7 पाठांत प्रश्न

**1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

(i) प्रताप ने आजीविका का आधार बनाया–

(क) खेती-बागवानी को ☐ (ख) नौकरी को ☐

(ग) दुकानदारी को ☐ (घ) अध्यापन को ☐

(ii) संयुक्त वाक्य में–

(क) एक उद्देश्य और एक विधेय होता है। ☐

(ख) एक मुख्य वाक्य और शेष आश्रित वाक्य होते हैं। ☐

(ग) सभी स्वतंत्र वाक्य योजक शब्दों से जुड़े होते हैं। ☐

(घ) प्रश्नवाचक और निषेधवाचक वाक्यों को जोड़ दिया जाता है। ☐

**2. पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

(i) प्रताप के बगीचे में कौन-कौन से पेड़ थे?

..........................................................................................................

(ii) जब मोहन प्रताप के पास पहुँचा, तब वह क्या कर रहा था?

.....................................................................................................................

(iii) सेठ के घर में मोहन क्या काम करता था?

.....................................................................................................................

(iv) प्रताप को नौकरी मिली, पर वह नौकरी पर नहीं गया। क्यों?

.....................................................................................................................

**3. निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

(i) सपने पूरे होना (अर्थ – इच्छाएँ पूरी होना)

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

(ii) साया उठ जाना (अर्थ – मृत्यु हो जाना)

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

(iii) नज़रें झुकाना (अर्थ – शर्मिंदगी का अहसास होना)

.....................................................................................................................

.....................................................................................................................

**4. हिंदी की वाक्य-संरचना में शब्दों का क्या क्रम होता है? लिखिए।**

.....................................................................................................................

**5. अर्थ के आधार पर निम्नलिखित वाक्यों के प्रकार बताइए :**

| | वाक्य | अर्थ के आधार पर प्रकार |
|---|---|---|
| (i) | दरवाज़े पर कौन खड़ा है? | ............................ |
| (ii) | माँ, आज मैं खाना नहीं खाऊँगा। | ............................ |
| (iii) | शीला गाना गा रही है। | ............................ |
| (iv) | अरे! तुम इतनी ज़ल्दी आ गए। | ............................ |

### 6. पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

सफलता प्राप्त करने के लिए सबसे पहले एक अच्छा मनुष्य बनना ज़रूरी है। व्यवहार में देखा जाता है कि हम एक अच्छा अधिकारी, अच्छा डॉक्टर, अच्छा इंजीनियर या अच्छा पिता, अच्छा भाई, अच्छा पति बनने पर सबसे ज़्यादा बल देते हैं; जबकि यह तभी संभव है, जब हम आदमी अच्छे बनें। इसके लिए व्यक्तिगत ईमानदारी का पालन करना, मानवीय मूल्यों और आदर्शों के महत्त्व को समझना, सभी की प्रतिष्ठा को ध्यान में रखना, समतापूर्ण और सौहार्दपूर्ण व्यवहार करना, कड़ी मेहनत करना और हर प्रकार की धोखाधड़ी व छल-कपट से दूर रहना ज़रूरी है।

(i) सफलता प्राप्त करने के लिए क्या ज़रूरी है?

.......................................................................................................................

(ii) किसी भी पद या संबंध में अच्छा सिद्‌ध होने के लिए क्या आवश्यक है?

.......................................................................................................................

(iii) कौन-सी चीज़ें मनुष्य को अच्छा आदमी बनाती हैं? किन्हीं तीन का उल्लेख कीजिए।

.......................................................................................................................

.......................................................................................................................

.......................................................................................................................

## 2.8 उत्तरमाला

**बोध-प्रश्न**

1. (ग) घरेलू नौकर होना
2. (ख) गुलामी

**पाठगत प्रश्न-2.1**

1. (ख) शर्मिंदगी
2. (घ) हर हाल में सुखमय है

**पाठगत प्रश्न-2.2**

1. (ग) सेठ के घर में नौकरी
2. (घ) गाँव में रहकर स्वरोज़गार करने का

❀ ❀ ❀

# 3

# प्रेरक प्रसंग

आपने सुना या देखा होगा कि कुछ लोग इतने महान होते हैं कि वे सेवाभाव, सादगी और ईमानदारी को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लेते हैं; ऐसे ही महान संत थे – गुरुनानक देव। कुछ ऊँचे दर्जे के ऐसे वैज्ञानिक व इंजीनियर होते हैं, जो समाज के कल्याण में ही अपना पूरा जीवन बिता देते हैं; ऐसे ही महान इंजीनियर थे – डॉ० विश्वेश्वरैया। इन दोनों महान व्यक्तियों के जीवन के कुछ प्रेरक प्रसंग आप इस पाठ में पढ़ेंगे।

## उद्देश्य

**इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–**

- संत गुरु नानकदेव द्वारा किए गए पाखंड एवं शोषण के विरोध का वर्णन कर सकेंगे;
- समाज-कल्याण के लिए किए गए कार्यों के महत्त्व का उल्लेख कर सकेंगे;
- नियमों के पालन के प्रति डॉ० विश्वेश्वरैया की निष्ठा तथा उनकी वैज्ञानिक सूझ-बूझ की सराहना कर सकेंगे;
- महान व्यक्तियों के जीवन प्रसंगों से प्रेरणा ग्रहण कर समाज-कल्याण के मार्ग पर चलने की कार्य-योजना का उल्लेख कर सकेंगे;
- संज्ञा शब्दों को पहचानकर संज्ञा के भेद बता सकेंगे।

## करके सीखिए

संत कबीर ने इस दोहे में किसका विरोध किया है–

माला फेरत जुग भया, गया न मन का फेर।<br>
करका मनका छाँड़ि कै, मन का मनका फेर।।

..............................................................................................................................................................

..............................................................................................................................................................